MIGRAINE.

Asma Kapadia ( )

मेरा नाम आसमा जुबेर है मुझे करीबन २० वर्ष से सिर दर्द की शिकायत है। रोजाना निमेजेसिक खाना मेरे लिए जरूरी था। काफी इलाज कराया मगर फायदा नहीं हुआ। फिर एक साल पहले नवंबर के महीने में मैं डॉ. साहिब के यहाँ आई। इलाज तो मैं अपने पति का करने आई थी पर मेरे पति ने मुझे भी दवाई लेने के लिए कहा। पहले तो मैं ऊपरी मन से दवाई लेने लगी। उम्मीद था यकीन नहीं था पर धीरे धीरे कुछ फरक नजर आने लगा। पहले मुझे टाईम पास लगता था। लेकिन फिर धीरे धीरे दवाई असर दिखाने लगी। पहले मैं एक महीने में ६० से ७० गोलियाँ खा लेती थी पर अब जब के एक साल से ऊपर होने को आया और मेरी गोलियाँ एक महीने में दस से बारह हो गई। मुझे डॉ. साहिब पर इतना विश्वास हो गया के मैं अपनी बहू और बेटे को भी लाने के लिए तैयार हो गई। आज मुझे खुशी होती है जब मैं डॉ. साहब से सुनती हूँ कि मैं १००% ठीक हो सकती हूँ। ये है कि वक्त बहुत लगता है पर यह हमारे फायदे के लिए है। और डॉ. साहब सिर्फ इलाज ही नहीं करते जीवन बिताने का सही तरीका भी बताते है। यह सही है कि वह बहुत सख्त है दवाई के मामले में पर जब वह हमें १००% विश्वास दिलाते है तो जरूर कोई न कोई बात तो होगी! अब यह हम मरीजों पर निर्भर करता है कि हम उनसे क्या लेते है। वह तो सब देने को तैयार है स्वीकार करना न करना हमारी काबिलियत है। उनकी बात ध्यान से सुने तो बहुत कुछ सीखने को मिलता है इलाज के अलावा जो और कहीं नहीं मिलता। इलाज के लिए धक्के खाने की जरूरत नहीं पड़ती। आखिर हम डॉ. मेहर के बताए इस तरीके से करें।

See below Next page

Scanned by CamScanner

मनोवैज्ञानिक सपरामिश भी खूब है। लेकिन इसको भी नजरअंदाज नहीं पड़ती है अगर सही लक्षण बता कर उनकी बात ध्यान से सुने तो। होम्योपैथी इलाज के बारे में मशहूर है कि वह देर से असर करती है पर मुझे ~~कुछ~~ इसका भी अनुभव नहीं हुआ जो दर्द मुझे सत्ताइस सालों से थी उसे कम होने के लिए फकत एक साल व कुछ ज्यादा देर नहीं हुई। यहाँ के कम्पाउंडर भी अपना फर्ज जिम्मेवारी से करते हैं। बहुत ही नम्रता से बात करते हैं और दवाई का तरीका समझाते हैं। डा॰ के बारे में मैं क्या बताऊँ वह तो जो सही मानों में अपना इलाज कराना चाहते हैं वही उनको अच्छी तरह समझ सकते हैं। अगर वह अपने मरीजों के साथ सख्ती न करें तो मरीज अपने इलाज के प्रति संजीदा नहीं होगा और इस तरह उनका मूल्य समय बरबाद होगा। यह जरूरी है एक सही जिम्मेवार डा॰ के लिए। और मैं क्या लिखा ? बस इतना काफी है कि मैं यहाँ से संतुष्ट हो कर जा रहा हूँ इससे बढ़कर एक मरीज के लिए क्या हो सकता है।

धन्यवाद

[signature]

20/2/2010.